JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

फ़िरोज़ाबाद की चूड़ी कला: रंग, रूप और भारतीय परंपरा

कुमारी नीरज
रिसर्च स्कॉलर (चित्रकला)
ललित कला संस्थान, डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, उत्तर प्रदेश

डॉ. गणेश कुशवाह
असिस्टेंट प्रोफेसर
मूर्तिकला विभाग, ललित कला संस्थान, डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, उत्तर प्रदेश

सारांश
फ़िरोज़ाबाद की चूड़ी कला भारत की काँच-शिल्प परंपरा की एक ऐसी शाखा है जिसमें उपयोगिता, सौंदर्य, अलंकरण और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति एक साथ गुंथे हुए मिलते हैं। दो शताब्दियों से अधिक समय से काँच उद्योग के लिए विख्यात यह नगर विशेष रूप से काँच की चूड़ियों के उत्पादन के कारण अपनी अलग पहचान रखता है, और इसी पहचान को मान्यता देते हुए भारत सरकार ने "फ़िरोज़ाबाद ग्लास" को भौगोलिक संकेतक (जीआई) के रूप में पंजीकृत भी किया है — आवेदन क्रमांक 155, प्रमाण-पत्र क्रमांक 202, दिनांक 31 मार्च 2014। परंतु चूड़ी को यदि केवल एक आभूषण-वस्तु के रूप में देखा जाए तो उसका कलात्मक पक्ष काफ़ी हद तक अनदेखा रह जाता है। इसके वृत्ताकार रूप, रंगों की विविधता, सतह की सज्जा, रेखात्मक विन्यास और पैटर्न में दृश्य कला के अनेक मूल तत्व सक्रिय रूप से मौजूद रहते हैं। प्रस्तुत अध्ययन फ़िरोज़ाबाद की चूड़ी कला को रंग, रूप, रेखा, पैटर्न, लय, संतुलन, पुनरावृत्ति और अलंकरण जैसे कला-तत्वों की कसौटी पर परखने का प्रयास है, साथ ही भारतीय आभूषण-परंपरा, शिल्प-कौशल के पीढ़ीगत हस्तांतरण और बदलती तकनीक व बाज़ार के दबाव में इस कला के बदलते स्वरूप को भी सामने रखता है। अध्ययन का आशय फ़िरोज़ाबाद की चूड़ी को महज़ एक औद्योगिक उत्पाद मानने की बजाय उसे एक जीवंत दृश्य एवं शिल्प-परंपरा के रूप में देखने का है।

कूट-शब्द: फ़िरोज़ाबाद, काँच की चूड़ी, चूड़ी कला, रंग, रूप, अलंकरण, भारतीय आभूषण, शिल्प परंपरा, दृश्य कला, समकालीनता

1. प्रस्तावना
भारतीय कला-परंपरा में आभूषणों का स्थान हमेशा से केंद्रीय रहा है। ये केवल शरीर की सज्जा भर नहीं करते — इनके भीतर सामाजिक पहचान, धार्मिक विश्वास, पारिवारिक रीति और सौंदर्यबोध, सब कुछ एक साथ बुना हुआ मिलता है। भारतीय आभूषणों के इतिहास पर नज़र डालें तो उनके रूप, सामग्री, बनाने की तकनीक और उपयोग की विविधता चौंकाने वाली है। Oppi Untracht ने अपने विस्तृत अध्ययन में भारतीय आभूषण-परंपरा को उसके रूप, निर्माण-तकनीक, धार्मिक-सामाजिक संदर्भों और ऐतिहासिक विकास सहित समग्रता में प्रस्तुत किया है[1]।

[1]Untracht, Oppi. Traditional Jewelry of India. London: Thames & Hudson, 2008.

इसी व्यापक परंपरा में चूड़ी का अपना एक अलग ही मुक़ाम है। देखने में उसका वृत्ताकार रूप बहुत सीधा-सादा लगता है, पर इसके निर्माण, रंग-संयोजन, सतह की सज्जा और पैटर्न में जितनी कलात्मक संभावनाएँ छिपी हैं, वे उतनी आसानी से नज़र नहीं आतीं। काँच की चूड़ियों के मामले में तो यह बात और भी सच है — पारदर्शिता, चमक, रंग और प्रकाश का आपसी तालमेल मिलकर एक ऐसा दृश्य-प्रभाव रचते हैं जो शायद ही किसी और आभूषण में मिले।

उत्तर प्रदेश का फ़िरोज़ाबाद नगर काँच उद्योग और ख़ासतौर पर काँच की चूड़ियों के लिए जाना जाता है। भारत सरकार के विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) के अनुसार फ़िरोज़ाबाद दो सदियों से अधिक समय से काँच उद्योग के लिए प्रसिद्ध है, और काँच की चूड़ियाँ यहाँ की सबसे प्रमुख उत्पाद-श्रेणी में गिनी जाती हैं[2]।

फ़िरोज़ाबाद की चूड़ी कला को केवल उत्पादन के नज़रिए से देखना उसके साथ नाइंसाफ़ी होगी। इसके रंग, आकार, सज्जा, पैटर्न और अलंकरण में स्थानीय शिल्प-कौशल जितना झलकता है, उतना ही भारतीय सांस्कृतिक प्रतीकों और बदलते बाज़ार का असर भी दिखता है। यही वजह है कि इस कला का अध्ययन ललित कला, शिल्प-अध्ययन, डिज़ाइन और सांस्कृतिक अध्ययन — इन चारों दृष्टियों से समान रूप से ज़रूरी हो जाता है।

1.1 अध्ययन के उद्देश्य

यह अध्ययन मुख्यतः निम्नलिखित उद्देश्यों को लेकर आगे बढ़ता है —

- फ़िरोज़ाबाद की काँच-चूड़ी कला की ऐतिहासिक और शिल्पगत पृष्ठभूमि को समझना
- चूड़ी के रंग, रूप, रेखा, पैटर्न और अलंकरण का कलात्मक विश्लेषण करना
- चूड़ी-कला को भारतीय आभूषण-परंपरा के व्यापक संदर्भ में रखकर देखना
- चूड़ी की सज्जा में प्रयुक्त दृश्य-कला के तत्वों की पहचान करना
- पारंपरिक शिल्प-कौशल के पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरण को समझना
- बदलती तकनीक और बाज़ार की माँग से चूड़ी-कला में आए बदलावों का अध्ययन करना
- पारंपरिक और समकालीन चूड़ी-डिज़ाइनों के बीच के रिश्ते को स्पष्ट करना
- फ़िरोज़ाबाद की चूड़ी-कला के सांस्कृतिक और कलात्मक महत्व को रेखांकित करना

1.2 अध्ययन की पद्धति

यह अध्ययन वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक, दोनों तरह की प्रकृति का है। इसमें द्वितीयक स्रोतों के साथ-साथ उपलब्ध दृश्य सामग्री और शिल्प-संबंधी दस्तावेज़ों का भी सहारा लिया गया है।

स्रोत-सामग्री के तौर पर भारत सरकार के हस्तशिल्प-संबंधी दस्तावेज़, भौगोलिक संकेतक रजिस्टर, राष्ट्रीय संग्रहालय की आभूषण-संबंधी सामग्री, फ़िरोज़ाबाद के काँच उद्योग पर हुए प्रकाशित शोध, और कला व डिज़ाइन की मान्य पुस्तकों का उपयोग किया गया है।

फ़िरोज़ाबाद के काँच उद्योग के ऐतिहासिक विकास को समझने में Khan और Ravi Kumar का अध्ययन विशेष रूप से काम आया, जिसमें 1900 से 1950 के बीच फ़िरोज़ाबाद के काँच और चूड़ी उद्योग के विकास, श्रम और उत्पादन से जुड़े

[2]विकास आयुक्त (हस्तशिल्प), वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार, “फ़िरोज़ाबाद ग्लास,” ग्लास ऐंड बीड्स क्राफ्ट्स।

पहलुओं की पड़ताल की गई है[3]। कला-विश्लेषण के लिए रंग के संदर्भ में Johannes Itten[4] और डिज़ाइन के तत्वों-सिद्धांतों के संदर्भ में Stephen Pentak व David A. Lauer[5] के कार्यों को आधार बनाया गया है।

1,3 साहित्य समीक्षा

फ़िरोज़ाबाद के काँच उद्योग पर जो साहित्य उपलब्ध है, वह अधिकतर औद्योगिक विकास, श्रम, तकनीक और सामाजिक परिस्थितियों के इर्द-गिर्द घूमता है। Khan और Ravi Kumar ने औपनिवेशिक काल में फ़िरोज़ाबाद के काँच-चूड़ी उद्योग के विकास के साथ-साथ चूड़ी-निर्माण से जुड़े श्रम और तकनीकी पहलुओं को भी सामने रखा है[6]।

Arnaud Kaba का अध्ययन फ़िरोज़ाबाद के काँच-श्रमिकों के कौशल, उनके कार्यस्थल, शिल्प-चेतना और कौशल के हस्तांतरण को केंद्र में रखता है। उनके मुताबिक़ गुरु-शिष्य संबंध, कार्यस्थल और स्थानीय समुदाय की भूमिका इस कौशल के निर्माण और आगे बढ़ने में बेहद अहम रही है[7]।

भारतीय आभूषण-परंपरा को समझने के लिए Oppi Untracht की Traditional Jewelry of India एक ज़रूरी संदर्भ-ग्रंथ है। इसमें भारतीय आभूषणों को महज़ सजावटी वस्तु मानकर नहीं, बल्कि उनके ऐतिहासिक, तकनीकी, सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों के साथ देखा गया है[8]। राष्ट्रीय संग्रहालय की 'Alamkara — The Beauty of Ornament' दीर्घा में 250 से अधिक वस्तुओं के ज़रिए भारतीय आभूषण-परंपरा के विभिन्न ऐतिहासिक चरणों को प्रस्तुत किया गया है[9]।

1.4 शोध-अंतराल

फ़िरोज़ाबाद के काँच उद्योग पर उपलब्ध अध्ययनों में इतिहास, औद्योगिक विकास, श्रम, कौशल और काम की परिस्थितियों से जुड़ी काफ़ी अहम सामग्री मिल जाती है[10][11][12][13][14][15]। इसके बावजूद, चूड़ी को ख़ासतौर पर ललित कला और दृश्य-सौंदर्य के नज़रिए से देखने की गुंजाइश अब भी काफ़ी बची हुई है। रंग-संयोजन, वृत्ताकार रूप, पैटर्न, पुनरावृत्ति, अलंकरण और सांस्कृतिक प्रतीकों को एक साथ लेकर किए गए कला-विश्लेषण की ज़रूरत बनी हुई है।

---

[3]Khan, Ishan, and V. M. Ravi Kumar. "Evolution of Glass Bangle Industry in Firozabad of Agra Division (1900–1950)." Research Journal of Social Sciences 9, no. 7 (2018): 50–60.
[4]Itten, Johannes. The Art of Color: The Subjective Experience and Objective Rationale of Color. New York: Reinhold, 1961.
[5]Pentak, Stephen, and David A. Lauer. Design Basics. 9th ed. Boston: Cengage Learning, 2016.

[7]Kaba, Arnaud. "Of Glass, Skills and Life: Trade Consciousness Among Firozabad's Glass Workers." Third World Quarterly 45, no. 4 (2024): 771–789.
[8]Untracht, Traditional Jewelry of India.
[9]National Museum, New Delhi. "Jewellery — Alamkara: The Beauty of Ornament."

प्रस्तुत अध्ययन इसी शोध-अंतराल को भरने की एक कोशिश है। इसका मुख्य योगदान यही है कि फ़िरोज़ाबाद की चूड़ी को केवल औद्योगिक उत्पाद या बाज़ार की वस्तु मानने की बजाय, दृश्य-कला, शिल्प और सांस्कृतिक परंपरा के संगम के तौर पर देखा जाए।

1.5. अध्ययन की सीमाएँ

प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों — प्रकाशित शोध-पत्रों, सरकारी दस्तावेज़ों और संदर्भ-ग्रंथों — पर आधारित है। फ़िरोज़ाबाद के कारीगरों, कार्यशालाओं और बाज़ार का प्रत्यक्ष क्षेत्रीय सर्वेक्षण इस अध्ययन का हिस्सा नहीं रहा, जिसकी वजह से समकालीन डिज़ाइन-रुझानों और उपभोक्ता-पसंद से जुड़े कुछ निष्कर्ष अपेक्षाकृत सामान्य रह गए हैं। इसी तरह, चूड़ी-निर्माण से सीधे जुड़े कारीगरों के साक्षात्कार या मौक़े पर किए गए फ़ोटो-दस्तावेज़ीकरण के अभाव में रंग और अलंकरण से जुड़े कई विवरण साहित्य पर ही निर्भर हैं। भविष्य के अध्ययन में क्षेत्रीय सर्वेक्षण, कारीगर-साक्षात्कार और दृश्य-दस्तावेज़ीकरण को शामिल करके इन सीमाओं को दूर किया जा सकता है।

कला-तत्वों को समझने के लिए Itten का रंग-संबंधी अध्ययन[16] और Pentak-Lauer की डिज़ाइन-पुस्तक[17] चूड़ी की दृश्य-संरचना पढ़ने के लिए उपयोगी सैद्धांतिक आधार देती हैं।

कुल मिलाकर, उपलब्ध साहित्य फ़िरोज़ाबाद को औद्योगिक और सामाजिक नज़रिए से समझने में तो मदद करता है, लेकिन चूड़ी के रंग, रूप, रेखा, पैटर्न, अलंकरण और दृश्य-सौंदर्य को एक समग्र कला-अध्ययन के तौर पर देखने की गुंजाइश अब भी बाक़ी है। प्रस्तुत शोध इसी दिशा में एक कोशिश है।

2. फ़िरोज़ाबाद की चूड़ी कला की ऐतिहासिक एवं शिल्पगत पृष्ठभूमि

फ़िरोज़ाबाद उत्तर प्रदेश का एक अहम काँच-उत्पादन केंद्र है, और सरकारी हस्तशिल्प-स्रोत इसे ख़ासतौर पर काँच की चूड़ियों के लिए मशहूर बताते हैं[18]। यहाँ काँच-शिल्प का विकास वक़्त के साथ अलग-अलग तकनीकी प्रक्रियाओं और श्रम-कौशल के ज़रिए हुआ है।

काँच की चूड़ी बनाने में काँच को बेहद ऊँचे तापमान पर पिघलाना, उसे आकार देना और फिर धीरे-धीरे ठंडा करना — ये सारी प्रक्रियाएँ शामिल हैं। सरकारी हस्तशिल्प-स्रोत के मुताबिक़ इसमें सिलिका सैंड, सोडा ऐश, कैल्शियम कार्बोनेट और पुनर्चक्रित काँच जैसी सामग्री काम में ली जाती है[19]।

चूड़ी बनाना केवल एक तकनीकी काम नहीं है। सामग्री की प्रकृति को समझना, तापमान पर नियंत्रण रखना, आकार तय करना और बरसों के अनुभव से आया हाथ का हुनर — इन सबका मिला-जुला योगदान होता है इसमें। ज़रा-सी चूक से चूड़ी की गोलाई, मोटाई, सतह या मज़बूती बिगड़ सकती है।

फ़िरोज़ाबाद के उद्योग के ऐतिहासिक विकास पर Khan और Ravi Kumar ने 1900-1950 के दौर को औपनिवेशिक भारत के औद्योगिक बदलावों की रोशनी में देखा है[20]। इससे यह साफ़ होता है कि चूड़ी-कला का आज का स्वरूप एक दिन में नहीं बना — यह लंबे अरसे में तकनीकी और सामाजिक बदलावों के साथ-साथ ही पका है।

फ़िरोज़ाबाद ग्लास को भौगोलिक संकेतक के तौर पर मिली मान्यता भी इस शिल्प की क्षेत्रीय पहचान पर एक तरह की सरकारी मुहर है। सरकारी रजिस्टर में "फ़िरोज़ाबाद ग्लास" को हस्तशिल्प श्रेणी में दर्ज किया गया है[21]।

3. चूड़ी एवं भारतीय आभूषण परंपरा

भारतीय समाज में चूड़ी का रिश्ता कभी भी सिर्फ़ सौंदर्य तक सीमित नहीं रहा। अलग-अलग क्षेत्रों और समुदायों में चूड़ी पहनने के अपने-अपने सामाजिक-सांस्कृतिक मायने रहे हैं। शादी हो, त्योहार हो या कोई और मौक़ा — चूड़ी हमेशा से भारतीय स्त्री-सज्जा का एक ज़रूरी हिस्सा रही है।

राष्ट्रीय संग्रहालय की 'Alamkara — The Beauty of Ornament' दीर्घा भारतीय आभूषणों की विविध परंपराओं को ऐतिहासिक क्रम में सामने रखती है — प्राचीन भारतीय सभ्यताओं से लेकर मुग़ल और राजसी दौर तक[22]। Untracht के अध्ययन में भी भारतीय आभूषणों के रूप, तकनीक और सामाजिक संदर्भ पर ख़ास ज़ोर दिया गया है[23]। इसी नज़रिए से चूड़ी को भी शरीर-सज्जा और सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान के बीच खड़ी एक वस्तु के रूप में देखा जा सकता है।

फ़िरोज़ाबाद की काँच की चूड़ी इसी परंपरा को स्थानीय शिल्प-कौशल और आधुनिक सामग्री के ज़रिए आगे बढ़ाती है। काँच की पारदर्शिता और उसका रंगीन स्वभाव इसे धातु के आभूषणों से एक अलग ही दृश्य-गुण देता है।

4. चूड़ियों में रंग का कलात्मक महत्व

रंग फ़िरोज़ाबाद की चूड़ी-कला की सबसे पहली और सबसे ज़्यादा ध्यान खींचने वाली ख़ासियत है। लाल, हरा, पीला, नीला, गुलाबी, नारंगी, बैंगनी, सफ़ेद — इन तमाम रंगों के अनगिनत संयोजन चूड़ियों को आकर्षक बनाते हैं।

रंग सिर्फ़ आँखों को भाने वाली चीज़ नहीं है, यह भावनाओं और संस्कृति के अर्थ भी साथ लेकर चलता है। भारतीय संदर्भ में लाल को शादी, ऊर्जा और उत्सव से, हरे को प्रकृति और जीवन से, और पीले को शुभता व उत्सव से जोड़कर देखा जाता रहा है — हालाँकि यह कहना ठीक नहीं होगा कि किसी रंग का मतलब हर समुदाय और हर मौक़े पर एक जैसा ही रहता है।

Johannes Itten ने रंगों के आपसी रिश्ते, विरोध, तालमेल और संयोजन को रंग-संरचना की बुनियाद माना है[24]। चूड़ी के डिज़ाइन में भी रंग का चुनाव अपने-आप में अकेला नहीं होता — आसपास के रंगों के साथ उसका रिश्ता तय करके ही किया जाता है।

---

[21]भौगोलिक संकेतक रजिस्ट्री, भारत सरकार, "फ़िरोज़ाबाद ग्लास," आवेदन क्रमांक 155, प्रमाण-पत्र क्रमांक 202, दिनांक 31 मार्च 2014।

जैसे, गहरे रंग की चूड़ी पर चमकीला अलंकरण ज़्यादा उभरकर दिखता है, वहीं हल्के रंग की चूड़ी पर गहरे रंग की रेखाएँ या बिंदु एक दृश्य-विरोध रचते हैं। इस तरह रंग चूड़ी की सतह पर एक तरह की दृश्य-लय और खिंचाव पैदा करता है।

काँच की एक ख़ासियत यह भी है कि प्रकाश सीधे उसके रंग और सतह पर असर डालता है। रोशनी पड़ते ही चूड़ी चमक उठती है और उसका दृश्य-रूप लगातार बदलता रहता है। इसी वजह से काँच की चूड़ी में रंग महज़ सतह पर टिका एक गुण नहीं रह जाता — यह प्रकाश के साथ एक सक्रिय रिश्ता निभाने वाला तत्व बन जाता है।

5. रूप एवं आकृति

चूड़ी का मूल रूप वृत्त है। वृत्त भारतीय कला में एक महत्वपूर्ण ज्यामितीय आकृति रहा है, जो पूर्णता, निरंतरता और गति का एक दृश्य-बोध कराता है।

चूड़ी की यह गोलाकार बनावट उसे शरीर के साथ एक लगातार बना रहने वाला दृश्य-रिश्ता देती है। जब हाथ में एक के बाद एक चूड़ी पहनी जाती है, तो वृत्त की पुनरावृत्ति होती चली जाती है और कई वृत्त मिलकर एक सामूहिक दृश्य-रचना बना देते हैं।

Pentak और Lauer के मुताबिक़ आकार, रेखा, पैटर्न और रंग — ये दृश्य-डिज़ाइन की बुनियादी संरचना के अहम हिस्से हैं[25]। जब चूड़ी की गोल बनावट पर रेखाएँ, बिंदु, रंगीन पट्टियाँ या दूसरे सजावटी तत्व जोड़े जाते हैं, तो मूल आकृति के ऊपर एक बिल्कुल नई दृश्य-संरचना उभर आती है।

यानी चूड़ी का रूप कभी स्थिर नहीं रहता। उसके मूल वृत्त के साथ जुड़ने वाला अलंकरण उसे लगातार ज़्यादा जटिल और सजावटी बनाता चला जाता है।

6. रेखा, पैटर्न एवं पुनरावृत्ति

रेखा दृश्य-कला का एक बुनियादी तत्व है। चूड़ी की सतह पर दिखने वाली सीधी, तिरछी, घुमावदार या समानांतर रेखाएँ उसके पूरे दृश्य-प्रभाव को बदल सकती हैं।

चूड़ी की गोलाई की वजह से रेखा का इस्तेमाल यहाँ ख़ास तौर पर मायने रखता है। वृत्त के चारों ओर घूमती रेखाएँ निरंतरता का एहसास कराती हैं, तो वहीं छोटे-छोटे रेखात्मक बँटवारे चूड़ी में एक लय पैदा कर सकते हैं।

पैटर्न अक्सर किसी आकृति या सजावटी इकाई की पुनरावृत्ति से बनता है। फूल, बिंदु, रेखा, ज्यामितीय आकृति या कोई भी अलंकरण जब बराबर अंतराल पर दोहराया जाता है, तो एक सजावटी पैटर्न उभरता है। Pentak और Lauer पैटर्न और टेक्सचर को डिज़ाइन के अहम तत्वों में गिनते हैं[26], और चूड़ी पर इनका इस्तेमाल सतह को दृश्य रूप से ज़्यादा सजीव बनाता है।

जब एक ही तरह की कई चूड़ियाँ साथ पहनी जाती हैं, तो पुनरावृत्ति और लय का असर और भी साफ़ नज़र आता है। इस तरह चूड़ी अकेली वस्तु न रहकर कई इकाइयों के समूह के तौर पर भी एक दृश्य-रचना गढ़ती है।

7. अलंकरण एवं सज्जा

फ़िरोज़ाबाद की चूड़ियों की कलात्मक पहचान में अलंकरण की भूमिका बड़ी है। सरकारी हस्तशिल्प-स्रोत में फ़िरोज़ाबाद की काँच-वस्तुओं, ख़ासकर चूड़ियों, के संदर्भ में विविध रंगों, बारीक डिज़ाइनों और चमकदार सजावटी पट्टियों के इस्तेमाल का ज़िक्र मिलता है[27]।

अलंकरण का मक़सद केवल वस्तु को सुंदर बनाना नहीं है — यह चूड़ी की दृश्य-पहचान को भी गढ़ता है। एक साधारण एकरंगी चूड़ी और एक बहुरंगी सज्जित चूड़ी का असर बिल्कुल अलग होता है।

कुछ चूड़ियों में रंगीन पट्टियाँ, चमकदार ज़री, मोती, धागे या दूसरी सजावटी सामग्री लगाई जाती है। आजकल के बाज़ार में धार्मिक प्रतीकों, अक्षरों, चित्रात्मक तत्वों और निजी पसंद से जुड़े डिज़ाइनों की माँग भी बढ़ रही है, हालाँकि इन नए रूपों की असल व्यापकता को समझने के लिए क्षेत्रीय सर्वेक्षण और छायाचित्र-दस्तावेज़ीकरण ज़्यादा भरोसेमंद तरीक़ा होगा।

इसलिए अलंकरण को परखते वक़्त सिर्फ़ डिज़ाइन की ख़ूबसूरती नहीं, बल्कि उसकी सामग्री, तकनीक, बनाने का तरीक़ा और इस्तेमाल करने वाले की पसंद — यह सब भी ध्यान में रखना ज़रूरी है।

8. चूड़ी कला और कला के तत्व

फ़िरोज़ाबाद की चूड़ी-कला को दृश्य-कला के बुनियादी तत्वों के आईने में देखें तो इसमें कई कलात्मक ख़ूबियाँ नज़र आती हैं।

8.1 रेखा

रेखा चूड़ी की सतह को बाँटने, सजाने और दिशा देने का काम करती है। गोल चूड़ी पर रेखाओं की पुनरावृत्ति एक लय पैदा कर सकती है।

8.2 आकार और रूप

चूड़ी का मूल आकार वृत्त है। इस वृत्ताकार रूप की पुनरावृत्ति ही चूड़ी को उसकी पहचान देती है, और उस पर होने वाला अलंकरण इस मूल रूप को एक सजावटी रूप में बदल देता है।

8.3 रंग

रंग चूड़ी का सबसे बड़ा आकर्षण है। अलग-अलग रंगों का मेल दृश्य-विरोध, तालमेल और भावनात्मक असर, तीनों पैदा करता है। Itten का रंग-सिद्धांत इन रंग-रिश्तों को समझने में मदद करता है[28]।

8.4 बनावट

काँच की चिकनी और चमकदार सतह अपने-आप में एक ख़ास दृश्य-बनावट देती है। जब इस पर धागा, ज़री, मोती या दूसरी सजावटी सामग्री जुड़ती है, तो सतह का अनुभव और गहरा हो जाता है।

8.5 लय

एक ही सजावटी इकाई की नियमित पुनरावृत्ति से लय बनती है। चूड़ियों के समूह में यह लय बहुत साफ़ नज़र आती है।

8.6 संतुलन

रंग, अलंकरण और आकृतियों को सतह पर संतुलित ढंग से सजाने से चूड़ी का दृश्य-प्रभाव स्थिर और आकर्षक बनता है।

8.7 पुनरावृत्ति

एक ही रंग, रेखा, आकृति या पैटर्न का दोहराव चूड़ी में एक सजावटी एकरूपता लाता है। कई चूड़ियाँ साथ पहनने पर यही पुनरावृत्ति एक बड़े दृश्य-पैटर्न में बदल जाती है।

10. चित्रकला एवं दृश्य कला के संदर्भ में चूड़ी

चूड़ी को आमतौर पर सिर्फ़ आभूषण मान लिया जाता है, पर उसकी सतह पर होने वाले चित्रात्मक और सजावटी प्रयोग उसे दृश्य-कला के अध्ययन से भी जोड़ देते हैं।

जब चूड़ी की सतह पर कोई आकृति, प्रतीक, अक्षर, धार्मिक विषय या और कोई चित्रात्मक तत्व उकेरा जाता है, तो वह सतह एक छोटे दृश्य-क्षेत्र की तरह काम करने लगती है।

यहाँ शिल्पकार के सामने एक सीमित, घुमावदार सतह पर डिज़ाइन को व्यवस्थित करने की चुनौती होती है — चित्र को चूड़ी की गोलाई के मुताबिक़ ढालना पड़ता है। यही वजह है कि चूड़ी पर डिज़ाइन बनाना सपाट काग़ज़ पर चित्र बनाने से बिल्कुल अलग तरह की दृश्य-समझ माँगता है। इसी वजह से चूड़ी को एक लघु सजावटी दृश्य-सतह के रूप में भी देखा जा सकता है।

9. शिल्प परंपरा और कौशल का हस्तांतरण

किसी भी पारंपरिक शिल्प का टिके रहना सिर्फ़ उसके उत्पाद पर नहीं, बल्कि उस कौशल पर टिका होता है जिससे वह उत्पाद बनता है।

Arnaud Kaba के अध्ययन में फ़िरोज़ाबाद के काँच-श्रमिकों के कौशल और उसके हस्तांतरण को अहम जगह दी गई है। उनके मुताबिक़ गुरु-शिष्य संबंध, कार्यस्थल और स्थानीय समुदाय — इन तीनों के ज़रिए ही यह कौशल बनता और आगे बढ़ता रहा है[29]।

इससे यह समझ आता है कि फ़िरोज़ाबाद की चूड़ी-कला सिर्फ़ तकनीक की उपज नहीं है — इसमें अनुभव, अभ्यास, बारीक़ निरीक्षण और पीढ़ी-दर-पीढ़ी मिला ज्ञान भी शामिल है। हालाँकि बदलती तकनीक, बाज़ार, उत्पादन-पद्धति और श्रम-संरचना ने पारंपरिक कौशल के स्वरूप को भी प्रभावित किया है, इसलिए आज चूड़ी-कला को समझने के लिए परंपरा और तकनीकी बदलाव, दोनों को साथ-साथ देखना ज़रूरी हो जाता है।

11. परंपरा से समकालीनता की ओर

समय के साथ चूड़ी के डिज़ाइन में भी बदलाव आया है। पारंपरिक रंगों और सजावटी रूपों के साथ-साथ अब नए रंग-संयोजन, बाज़ार पर आधारित डिज़ाइन और निजी पसंद से जुड़ी सज्जा भी देखने को मिलती है।

फ़िरोज़ाबाद के सरकारी हस्तशिल्प-स्रोत में काँच की चूड़ियों के विविध रंगों और बारीक़ डिज़ाइनों का ज़िक्र मिलता है[30], जो यह बताता है कि चूड़ी-कला कोई ठहरी हुई परंपरा नहीं है, बल्कि लगातार बदलती-सँवरती रहने वाली शिल्प-प्रक्रिया है।

समकालीनता का मतलब यह नहीं कि पुराने रूप ख़त्म हो गए हैं — बल्कि पुराने रूपों के साथ नए सजावटी तत्व जुड़कर नए डिज़ाइन गढ़ रहे हैं। धार्मिक प्रतीकों, नामों, अक्षरों, रंग-संयोजनों और निजी पहचान से जुड़े डिज़ाइनों का चलन इसी बदलाव की संभावना को दिखाता है, हालाँकि इन समकालीन रूपों की असल व्यापकता को समझने के लिए क्षेत्रीय सर्वेक्षण पर आधारित निष्कर्ष ही ज़्यादा भरोसेमंद होंगे।

12. चूड़ी कला, श्रम और शिल्प की वास्तविकता

चूड़ी की ख़ूबसूरती के पीछे श्रम की एक जटिल प्रक्रिया काम करती है, इसलिए चूड़ी-कला का अध्ययन सिर्फ़ तैयार वस्तु की सौंदर्यात्मक ख़ूबियों तक सीमित नहीं रहना चाहिए।

फ़िरोज़ाबाद के काँच उद्योग से जुड़े सामाजिक और स्वास्थ्य-संबंधी अध्ययनों ने श्रमिकों की काम की परिस्थितियों पर भी ग़ौर किया है। 1987 में हुए एक अध्ययन में काँच-चूड़ी उद्योग के श्रमिकों में तापीय तनाव को परखा गया था[31]। 1988 के एक अध्ययन में फ़िरोज़ाबाद के काँच-चूड़ी श्रमिकों में दीर्घकालिक ब्रोंकाइटिस से जुड़े कारणों की जाँच हुई[32], और उसी साल एक और अध्ययन में काँच-चूड़ी कारख़ाने में तापीय तनाव के प्रति श्रमिकों की शारीरिक प्रतिक्रियाओं को समझने की कोशिश की गई[33]।

इन अध्ययनों का मक़सद कला-सौंदर्य को परखना नहीं था, फिर भी ये इस बात की तरफ़ इशारा करते हैं कि चूड़ी के सौंदर्य के पीछे जो श्रम और काम की परिस्थितियाँ हैं, उन्हें भी शिल्प-अध्ययन का हिस्सा माना जाना चाहिए। 2012 में संसद की एक समिति ने Welfare of Glass and Bangle Workers of Firozabad: A Case Study नाम से एक रिपोर्ट प्रकाशित की थी, जो फ़िरोज़ाबाद के काँच-चूड़ी श्रमिकों के कल्याण से जुड़ा एक अहम सरकारी दस्तावेज़ है[34]।

इसलिए फ़िरोज़ाबाद की चूड़ी-कला का पूरा अध्ययन तभी सार्थक होगा जब सौंदर्य, तकनीक, संस्कृति और श्रम — इन चारों पहलुओं को साथ लेकर देखा जाए।

---

[31] Rathod, R. A., L. J. Bhagia, G. L. Pandya, V. L. Katagade, D. J. Parikh, and B. B. Chatterjee. “Thermal Stress and Physiological Strain in the Glass Bangle Industry.” European Journal of Applied Physiology and Occupational Physiology 56, no. 1 (1987): 58–63.

[32] Srivastava, A. K., N. Mathur, S. K. Rastogi, and B. N. Gupta. “Case Control Study of Chronic Bronchitis in Glass Bangle Workers.” Journal of the Society of Occupational Medicine 38, no. 4 (1988): 134–136.

[33] Rastogi, S. K., B. N. Gupta, T. Husain, and N. Mathur. “Physiological Responses to Thermal Stress in a Glass Bangle Factory.” Journal of the Society of Occupational Medicine 38, no. 4 (1988): 137–142.

[34] Committee on Labour, Textiles and Skill Development, Lok Sabha. Welfare of Glass and Bangle Workers of Firozabad: A Case Study. Report No. 32, 30 August 2012.

13. चूड़ी कला का सांस्कृतिक महत्व

भारतीय समाज में आभूषणों का इस्तेमाल निजी सज्जा के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन से भी गहरे जुड़ा रहा है, और चूड़ी इसी परंपरा का एक अहम हिस्सा है।

शादी और त्योहारों के मौक़ों पर रंग-बिरंगी चूड़ियाँ एक ख़ास तरह का उत्सवी माहौल बनाती हैं। चूड़ियों की खनक, उनका रंग और हाथ में पहनी गई कई चूड़ियाँ मिलकर स्त्री-सज्जा को एक अलग ही दृश्य और श्रव्य आयाम देती हैं।

फ़िरोज़ाबाद की चूड़ी इस सांस्कृतिक परंपरा को स्थानीय काँच-शिल्प के ज़रिए अभिव्यक्त करती है, जहाँ रंग, चमक और अलंकरण मिलकर एक ऐसी चीज़ बनाते हैं जो उपयोगी होने के साथ-साथ सांस्कृतिक अर्थ भी ढोती है। भारत सरकार के व्यापक ग्लास ऐंड बीड्स क्राफ्ट्स स्रोत में भी काँच और मनका-शिल्प को रंग, बनावट, परंपरा और सांस्कृतिक पहचान से जुड़े शिल्प-रूपों के तौर पर प्रस्तुत किया गया है[35]। इस तरह चूड़ी-कला को भारतीय संस्कृति की निरंतरता में एक छोटे मगर अहम दृश्य-माध्यम के रूप में देखा जा सकता है।

14. फ़िरोज़ाबाद की चूड़ी कला में दृश्य सौंदर्य

फ़िरोज़ाबाद की चूड़ी-कला की दृश्य-सुंदरता को मोटे तौर पर पाँच स्तरों पर समझा जा सकता है —

- पहला, रंग — विविध रंग चूड़ी को आकर्षक बनाते हैं।
- दूसरा, रूप — वृत्ताकार आकृति चूड़ी की मूल पहचान है।
- तीसरा, रेखा और पैटर्न — सजावटी रेखाएँ और दोहराए गए रूप सतह पर लय पैदा करते हैं।
- चौथा, चमक और प्रकाश — काँच की सतह रोशनी को परावर्तित और पार करती है, जिससे चूड़ी का दृश्य-प्रभाव बदलता रहता है।
- पाँचवाँ, समूह-संरचना — कई चूड़ियाँ साथ पहनने पर रंग और रूप की पुनरावृत्ति एक बड़ा दृश्य-पैटर्न रच देती है।

इस नज़रिए से चूड़ी अपने-आप में एक स्वतंत्र वस्तु होने के साथ-साथ शरीर पर बनने वाली एक गतिशील दृश्य-रचना का हिस्सा भी बन जाती है।

15. निष्कर्ष

फ़िरोज़ाबाद की चूड़ी-कला को अगर एक वाक्य में समेटना हो, तो यह कहा जा सकता है कि यह शिल्प, तकनीक और संस्कृति के मेल से बनी एक ऐसी परंपरा है जिसे उसका हक़ीक़ी कलात्मक दर्जा अब तक पूरी तरह नहीं मिल पाया है। इसका वृत्ताकार रूप, इसके रंगों की बहुतायत, इसकी सतह पर उभरते पैटर्न और अलंकरण — ये सब मिलकर इसे दृश्य-कला के अध्ययन का उतना ही वाजिब विषय बनाते हैं जितना पेंटिंग या मूर्तिकला। साथ ही, इस कला के पीछे खड़े मनिहार समुदाय और श्रमिकों की मेहनत, उनकी कार्य-परिस्थितियाँ भी इस अध्ययन का उतना ही ज़रूरी हिस्सा हैं जितना रंग और डिज़ाइन। फ़िरोज़ाबाद की चूड़ी को केवल एक औद्योगिक उत्पाद मान लेना उसकी सांस्कृतिक गहराई और शिल्पगत बारीक़ी, दोनों के साथ अन्याय होगा — यह वास्तव में भारतीय दृश्य-सौंदर्य और परंपरा की एक जीवंत, चमकती हुई मिसाल है।

---

[35]विकास आयुक्त (हस्तशिल्प), वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार, "फ़िरोज़ाबाद ग्लास," ग्लास ऐंड बीड्स क्राफ्ट्स।

संदर्भ सूची (Bibliography)

1. Bansal, Ritu, and Chandra Kumari. "Observational Study of Home Based Glass Bangle Women Workers of Firozabad City." Indian Journal of Applied Research 6, no. 2 (February 2016).

2. Committee on Labour, Textiles and Skill Development, Lok Sabha. Welfare of Glass and Bangle Workers of Firozabad: A Case Study. Report No. 32. New Delhi: Lok Sabha Secretariat, 30 August 2012.

3. Development Commissioner (Handicrafts), Ministry of Textiles, Government of India. "Firozabad Glass." Glass and Beads Crafts.

4. Development Commissioner (Handicrafts), Ministry of Textiles, Government of India. A Compendium of Indian Handicrafts and Handlooms Covered Under Geographical Indications (GI).

5. District Administration, Firozabad, Government of Uttar Pradesh. "Glass Industry."

6. Geographical Indications Registry, Government of India. "Firozabad Glass." Application No. 155; Certificate No. 202; Certificate Date: 31 March 2014.

7. Itten, Johannes. The Art of Color: The Subjective Experience and Objective Rationale of Color. New York: Reinhold, 1961.

8. Kaba, Arnaud. "Of Glass, Skills and Life: Trade Consciousness Among Firozabad's Glass Workers." Third World Quarterly 45, no. 4 (2024): 771–789. https://doi.org/10.1080/01436597.2023.2200158.

9. Khan, Ishan, and V. M. Ravi Kumar. "Evolution of Glass Bangle Industry in Firozabad of Agra Division (1900–1950)." Research Journal of Social Sciences 9, no. 7 (2018): 50–60.

10. National Museum, New Delhi. "Jewellery — Alamkara: The Beauty of Ornament."

11. Pentak, Stephen, and David A. Lauer. Design Basics. 9th ed. Boston: Cengage Learning, 2016.

12. Rastogi, S. K., B. N. Gupta, T. Husain, and N. Mathur. "Physiological Responses to Thermal Stress in a Glass Bangle Factory." Journal of the Society of Occupational Medicine 38, no. 4 (1988): 137–142. https://doi.org/10.1093/occmed/38.4.137.

13. Rathod, R. A., L. J. Bhagia, G. L. Pandya, V. L. Katagade, D. J. Parikh, and B. B. Chatterjee. "Thermal Stress and Physiological Strain in the Glass Bangle Industry." European Journal of Applied Physiology and Occupational Physiology 56, no. 1 (1987): 58–63. https://doi.org/10.1007/BF00696377.

14. Srivastava, A. K., N. Mathur, S. K. Rastogi, and B. N. Gupta. “Case Control Study of Chronic Bronchitis in Glass Bangle Workers.” Journal of the Society of Occupational Medicine 38, no. 4 (1988): 134–136. https://doi.org/10.1093/occmed/38.4.134.

15. Untracht, Oppi. Traditional Jewelry of India. London: Thames & Hudson, 2008.